Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com

ISSN : 2321- 4708
June 2019, Year - 5 (74)
Paper ID : RRJ000025

वर्तमान परिवेश में 'रश्मिरथी' प्रबंधकाव्य की प्रासंगिकता

डॉ. मालदे ए. कुछडिया
स्टेशन प्लाट पे.से.कु.शाला,
राणावाव – २

दिनकर हिंदी के आधुनिक काव्य-युग के चारण महाकवि है । उनका व्यक्तित्व क्रांति की ज्वाला से उदीप्त, अदम्य पौरुष एवं राष्ट्रीयता से ओतप्रोत, शोषण एवं अनीति के समक्ष अंगार उगलनेवाला क्रांतिकरी, चेतना से प्रदीप्त रहा है । दिनकरजी ने 'रश्मिरथी' काव्य में महाभारत के उज्जवल और पुण्यशाली पात्र को नायक के रूप में प्रस्तुत किया है । वह चरित्र एक उपेक्षित, पीड़ित एवं शोषित मानवता का प्रतिक बनकर आया है । रश्मिरथीकार की यह काव्य सृष्टि प्रगट-युग (वर्तमान युग) की चेतना का प्रतिनिधित्व करतीहै ।

'रश्मिरथी' की कथा महाभारतयुगीन मुख्य घटना पर आधारित रहा है, परन्तु इनकेकवि नवयुग की विचारधारा का प्रतिनिधित्व कर रहे है । पूंजीपतियों का नहीं । दीन, हीनों, शोषितों, श्रमिकों, एवं उद्योग-निरत सचरित्र कर्मठ व्यक्तियों का युग है । फिर भी स्वतंत्रता के इतने सालों बाद भी समानता नहीं आ पायी है । आज समाज, देश में हम जाति और कुल गोत्र के नाम पर कदम-कदम पर प्रतिभाशाली युवकों की उच्चाकांक्षाओं की बलि ली जाती है । अतः दिनकरजी ने 'रश्मिरथी' काव्य की वर्तमान समय में प्रासंगिकता निम्नरूप में प्रस्तुत है ।

१) मानव मूल्य :-

'रश्मिरथी' के कर्ण अपने सद्‌गुणों, अपनी तेजस्विता एवं उध्योगशीलता से हमे भी नूतन प्रेरणा दे जाते है । कर्ण को कृपाचार्य जब उसके गुणों और तेजस्विता न देखकर उसको जाति, गोत्र का प्रश्न करके उसे दूर कर दिया जाता है । तब कर्ण जैसी स्थिति आज के युवानों की भी है। जो उसे अपमानित करके, उसकी उच्च आकाँक्षाओं को खाक कर देते है । तब कर्ण कायह कथन आज के एसे पीड़ित युवाओं के लिए प्रेरणादायी है – जो सही मानव मूल्यों का सन्देश दे जाते है । जैसे –

"उंच-नीच का भेद न माने वही श्रेष्ठ है ।
दया-धर्म जिसमे हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है ।"[1]

आज मानुष को उसके गुण से नहीं, कर्म से नहीं, जाती-कुल और गोत्र से पहचानकर सम्मान दिया जाता है जो गलत है ।

आज के युवानो को कर्ण की भाँति उद्योग, सद्‌गुणों, पौरुष एवं साहस को यदि श्रेष्ठता नहीं देंगे तो ये गुण तिरस्कृत हो जायेंगे और मानव दिन-प्रतिदिन भ्रष्ट होता जायेगा । अतः इससे हमें स्पष्ट सन्देश मिलता है की निम्न वर्ग, जाति या कूल में जन्मे व्यक्तियों में भी महानता के तत्त्व विद्यमान है । उन्हें सुअवसर दो कर्ण की तरह जाति, गोत्र के नाम पर पछाड़ो मत; अपमानित मत करो; उसे प्रोत्साहित करो ।

२) नारी सन्देश :-

'रश्मिरथी' में कुन्तिने समाज के डर से पुत्र-त्यागकर अपने अन्य पुत्रों का जीवन वीषादमय बना दिया साथ-साथ मातृजाति कोकलंकित भी किया । नारी यदि अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करती रही तो व्यक्ति ही नहीं सारा समाज विनाश के मुंह में जायेगा । अतः समाज भीरुता छोड़ जिस प्रकार कुंती कर्ण के पास पहुंचती है और अपनी गलती स्वीकार करती है तथा अपनी निडरता व्यक्त करती है ।

[1]रश्मिरथी, रामधारी सिंह दिनकर

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-74-june-2019/RRJ000025

ISSN : 2321- 4708
June 2019, Year - 5 (74)
Paper ID : RRJ000025

आज नारी-उपेक्षा का युग अस्त हो चूका है । आज नारी ह्रदय के सत्य को मुख तक लाने में ही नहीं आचरण में उतारने तक की आत्मशक्ति अपने में महसूस करने लगी है । आज कुंती की भाँति जिस प्रकार कर्ण को त्याग दिया था उसी भाँति आज भी हम देखते है कि कूड़े-कचरे में नवजात शिशु मिलते है लेकिन कुंती की भाँति समाज के सर पर पैर रखने की निडरता नहीं है । तब ऐसी स्थिति में कुंती का यह संदेश आज प्रासंगिक है –

"भागी थी तुझको छोड़ कभी जिस भय से,
फिर कभी न होगा, तुझको जिन संशय से
उस जड़ समाज के सर पर कदम धरुँगी,
डर चुकी बहुत, अब और न अधिक डरूंगी ।[2]

⇨ **मानव व्यव्हार :**

'रश्मिरथी' कर्ण जैसे एक उपेक्षित मानव की कथा है । जिसमे कर्ण और दुर्योधनके पात्र के द्वारा एक मानव दूसरे मानव के साथ भेद-भाव रहित आचरण का सन्देश दिया है । जो कर्ण के प्रति द्रोणाचार्य का अपमानजनक व्यवहार देख कर्ण का पक्ष लेते है ।जो मानवता का व्यवहार कर आज के मनवो को एक नया सन्देश दिया है । आज का मानव और कोई धर्म कार्य करे या न करे, पर मानव के साथ विशेष रूप से शोषित मानव के साथ मानवतापूर्ण व्यव्हार कर सके तो भी एक सही मानवता परिपूर्ण हो सकती है । आज विश्व-बंधुत्व एवं विश्व मैत्री का उद्घोषबड़ी श्रद्धा से किया जाता है, जब अपने चरित्र को उदात बना दिया जाय । दिनकरजी कर्ज के पात्र के द्वारा जिस मानव धर्म की प्रतिष्ठा में आजीवन तन-मन-धन से निमग्न रहा है, त्याग, मैत्री, सेवा, श्रम, उद्योग, दान, एवं सहिष्णुता के जिन प्रदिपों कोउसने प्रज्जवलित किया है । वह निश्चय ही आज के मानव को प्रेरणा देता है । आज मानव चाहे कैसी भी स्थिति, परिस्थिति और समस्याओं में जी रहा हो परन्तु वह अपना मानवता का व्यवहार नहीं छोड़ेगा ! जो हमारी संस्कृति और संस्कारिता की पहचान है ।

⇨ **मैत्रीधर्म :-**

आज के इस भौतिकतावादी समय में जहाँ पारिवारिक संबंधो का दिन–प्रतिदिन टूटना संभव होता जा रहा है । तब आज के युग में मित्रता तो पापड़ की तरह टूटती जा रही है । अतः ऐसी स्थिति में व्यक्ति निराश हो चला है । उसके दुःख सुख में एकभी सच्चे मित्र का सहयोग उसे नहीं मिल पाता । यह सन्देश मिलता है कि दुर्योधन को विजय दिलाने के लिए तन-मन-धन से परिश्रम करता है ।अपना सारा जीवन उनके लिए दे देता है और अंत में विजय न दिला पाने का दुःख अनुभव करता हुआ इस लोक से प्रयाणकरता है । ऐसामैत्रीरूप नवयुगीय मानव की एक विशाल समस्या है । अतः आज प्रवर्तमान मानवों के लिए प्रेरणादायी एवं प्रासंगिक है ।

अंततः 'रश्मिरथी' प्रबंध काव्य आज ऐसे टूटते मानव मूल्यों में मानव समाज कोउतना ही प्रासंगिक लगता है जितना उस समय था । तो दूसरी ओरआजजबसमाज नारी को पुरुष समतुल्य माना गया है तो नारी को भी आपना साहस और समाज-भीरु न होने का सन्देश दिया है । दिनकरजी ने सबसे बड़ी बात यह बताई कि आज के मानव का मानवके प्रतिजो पशुता से हीन व्यवहार है, उसके प्रति निर्देशकरते हुए मानव कल्याणयुक्त सदाचरणभरे व्यव्हार की ओरसंकेत किया है । जिसमें गाढ़ मित्रता देखने को मिलती हो । वास्तव में दिनकरजीका 'रश्मिरथी' काव्य आज वर्तमान समय में अति प्रासंगिक है ।

सन्दर्भ सूची

१) रश्मिरथी – रामधारीसिंह दिनकर
२) सामाजिक परिवर्तन के विविध आयाम, डॉ. उषा सिंह, एच.पी. सिंह
३) हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

[2]रामधारीसिंह दिनकर

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-74-june-2019/RRJ000025